राम की शक्तिपूजा की केंद्रीय संवेदना

संध्या शर्मा

एम. ए. (हिन्दी)

राम की शक्तिपूजा का विषय आख्यानपरक है क्योंकि इसमें कृतिवास रामायण की कथा के एक अंश को आधार बनाया गया है। निराला का उद्देश्य कृतिवास रामायण का खड़ी बोली में अनुवाद करना नहीं था। वे तो राम के मिथक में निहित सृजनात्मक संभावनाओं के आधार पर ऐसी कालजयी कविता रचना चाहते थे जो एक साथ सार्वकालिक व युगीन प्रश्नों से टकरा सके। इसके लिए आवश्यक था कि मिथक को वैसा का वैसा न स्वीकारा जाए बल्कि रचनाकार उसमें अपनी कल्पना से कुछ परिवर्तन करे। इसी अर्थ में कहा जा सकता है कि कवि को आख्यानपरक विषय के बावजूद कल्पना के प्रसार का पर्याप्त अवसर मिला है।

राम की शक्तिपूजा काव्य रूप की दृष्टि से लंबी प्रबंधात्मक कविता है महाकाव्य नहीं। इसका आकार महाकाव्यों की तुलना में अत्यंत लघु है, इसलिए महाकाव्यों के पारंपरिक लक्षण इसमें खोजना निरर्थक है। किंतु रचना की महाकाव्यात्मकता सिर्फ आकारगत ढांचे व बाह्य विशेषताओं से निर्धारित नहीं होती, उसमें रचना के आंतरिक गुणों की भी महती भूमिका होती है।

डॉ.नगेंद्र ने अपनी विख्यात कृति 'कामायनी के अध्ययन की समस्याएं' में महाकाव्यत्व की पहचान के लिए कुछ नई कसौटियां निर्धारित की जैसे उदात्त कार्य, उदात्त चरित्र, उदात्त भाव उदात्त कथानक तथा उदात्त शैली। इन कसौटियों के आलोक में 'राम की शक्तिपूजा' के आंतरिक महाकाव्यत्व का मूल्यांकन किया जा सकता है।

राम की शक्तिपूजा अपने बाहरी ढांचे में चाहे लंबी कविता हो, आंतरिक गुणों की दृष्टि से 'महाकाव्य' है। यह गुण इसमें इतने अतिरेक के साथ है कि रामचरितमानस जैसे एकाध महाकाव्य को छोड़कर शायद ही कोई महाकाव्य अपनी आकरगत दीर्घता के बावजूद इसे प्रतिस्पर्धा कर सके। अब हम राम की शक्तिपूजा की केन्द्रीय संवेदना पर विचार करेंगे।

राम की शक्ति पूजा की केंद्रीय संवेदना 'सीता की मुक्ति'

'राम की शक्तिपूजा' की केंद्रीय संवेदना का प्रसंग विवादास्पद है क्योंकि विभिन्न समीक्षकों ने इस संबंध में भिन्न-भिन्न व्याख्याएं की हैं। नंदकिशोर नवल का दावा है कि इस कविता का केंद्रीय भाव 'सीता की मुक्ति' और सीता के प्रतीक के माध्यम से 'नारी मुक्ति' है। निराला गार्हस्थिक प्रेम के कवि हैं। उनके संपूर्ण साहित्य में गार्हस्थिक प्रेम की प्रतिबद्धता के कई उदाहरण दिखते हैं, जैसे पंचवटी प्रसंग,तुलसीदास, अष्टम एडवर्ड के प्रति तथा सरोज स्मृति के भी कुछ अंश। शक्ति पूजा की मूल संवेदना इसी कड़ी का अगला चरण है। वे सरोज स्मृति में पुत्री की मुक्ति करते हैं। राम की शक्तिपूजा में पत्नी की मुक्ति उनकी नारी मुक्ति चेतना का सर्वोच्च चरण है।

शक्ति पूजा में सीता की मुक्ति केंद्रीय भाव है, इसका प्रमाण यह है कि न सिर्फ कथानक के उद्देश्य के रूप में बल्कि कथानक के हर मोड़ पर सीता उपस्थित हैं। यूं प्रतीत होता है। कि राम के पास न होते हुए भी राम के शिविर की सभी घटनाओं का संचालन सीता ही कर रही हैं।

सीता की मुक्ति कथानक का उद्देश्य है। यह रचना के अंतिम हिस्से में पूर्णता स्पष्ट होता है। शक्ति पूजा का अंतिम इंदीवर मां दुर्गा उठाकर ले गई हैं और रिक्त स्थान को देखकर राम आत्मधिक्कार की अवस्था में पहुंच गए हैं। वे कहते हैं –

" धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।
जानकी हाय ! उद्धार प्रिया का हो न सका।"

प्रश्न है कि यह आत्मधिक्कार किसलिए है ? यह न तो विजय के लिए है न साधना की सफलता के लिए बल्कि सिर्फ सीता की मुक्ति के लिए है। घोर विफलता तथा आत्मधिक्कार की अवस्था में व्यक्ति सबसे पहले उसी लक्ष्य की बात करता है जो सबसे महत्वपूर्ण होते हुए भी पूरा नहीं हो पाता। आत्मधिक्कार के तुरंत बाद ' जानकी ! हाय उद्धार प्रिया का हो ना सका' कथन का राम के मुख से निकलना इस बात का प्रमाण है कि सीता की मुक्ति ही कविता का केंद्रीय उद्देश्य है।
सीता न सिर्फ इस संपूर्ण युद्ध व शक्तिपूजा का उद्देश्य हैं बल्कि कथा के हर मोड़ पर भी सक्रिय रूप से उपस्थित हैं। कविता की संरचना का सूक्ष्म विश्लेषण ऐसे कई बिंदुओं की पहचान कराता है -

(क) कविता की पहली 18 पंक्तियों में राम की सेना में पराजय तथा हताशा की मानसिकता है। इनमें अंतिम दो पंक्तियों में संकेत है कि हनुमान एकमात्र योद्धा हैं जो अभी भी पूर्ण चेतना व क्षमता से युक्त हैं। 18 वीं पंक्ति सीता पर केंद्रित है जिसे पढ़कर स्पष्टतः प्रतीत होता है कि युद्ध का संपूर्ण वर्णन यही दिखाने के लिए हुआ है कि सीता की मुक्ति की आशा कितनी धूमिल हो गई है -

"उदगीरित- वहिन- भीम- पर्वत -कपि –चतु: प्रहर,
जानकी भीरू उर आभाभर रावण सम्वर।"।

(ख) युद्ध प्रसंग के बाद राम की सेना की सानु सभा का प्रसंग है। राम के मन में अंधकार एवं निराशा की 'अमानिशा' है दिशाओं' अर्थात् सफलता के मार्गों का सारा ज्ञान खो चुका है, चिंता व तनाव समुद्र की भांति लगातार गरज रहे हैं और भूधर के समान स्थिर राघवेंद्र को संशय , विकलता, पराजय बोध और असमर्थता बोध ने पूरी तरह झकझोर दिया है। इस घोर निराशा में राम को आशा मिलती है तो अपने जीवन की सबसे सुंदर स्मृति से और यह स्मृति सीता की ही है-

" ऐसे क्षण अंधकार घन में जैसे विद्युत ,
जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि,अच्युत
x x x x x x x x
नयनों का नयनों से गोपन प्रिय संभाषण
पलकों का नवपलकों पर प्रथमोत्थान पतन"

(ग) सीता मिलन की स्मृति इतनी स्फूर्तिदायक है कि घोर निराशा में डूबे राम कुछ क्षणों के लिए संपूर्ण निराशा को छोड़कर 'विश्वविजयभावना' से भर जाते हैं और हर धनुर्भंग को तैयार हो जाते हैं-

" सिहरा तन, क्षण- भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,
फूटी स्मिति सीता - ध्यान -लीन राम के अधर,
फिर विश्व विजय भावना हृदय में आयी भर।"।

(घ) किंतु, स्मृतिजन्य आत्मविश्वास मनोवैज्ञानिक राहत चाहे पहुंचाए, वास्तुगत स्थितियों को पलट नहीं सकता। यही कारण है कि आज के युद्ध में देखी हुई भीमा की मूर्ति का स्मरण होते ही राम शंकाओं से घिर उठते हैं और शंकाग्रस्त होते ही उन्हें सीता की वे आंखें याद आती हैं जो इस उम्मीद में राम की प्रतीक्षा कर रही हैं कि वे उन्हें बचाने आएंगे-

" लख शंकाकुल हो गए अतुल बल शेष शयन
खिंच गए दृगो में सीता के राममय नयनय

फिर सुना हंस रहा अट्टहास रावण खल-खल,
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्तादल।”

इसके बाद सानु सभा में राम की पराजय भावना को देखते हुए विभीषण एक मित्रोचित्र प्रयास करते हैं ताकि राम का खोया आत्मविश्वास पुनः लौट सके। किसी के खोए हुए आत्मविश्वास के जगाने का तरीका यही होता है कि उसके मार्मिक स्थल पर चोट की जाय। विभीषण सीता की याद दिलाकर तथा सीता के संभावित कष्टों का चित्र खींचकर राम को प्रेरित कर रहे हैं -

“ कितना श्रम हुआ व्यर्थ आया जब मिलन समय,
तुम खींच रहे हो हस्त जानकी से निर्दय ,
x x x x x x x x
बैठा उपवन में देगा दुख सीता को फिर।”

(ड) इसके बाद सीता की केंद्रीयता कविता के अंतिम हिस्से में स्पष्ट होती है। राम आत्मधिक्कार के तुरंत बाद न सिर्फ सीता की मुक्ति न होने की हताशा व्यक्त करते हैं बल्कि इसी बिंदु पर उनके उदात्त व्यक्तित्व का रूपांतरण होता है। राम सात्विक व्यक्ति हैं और नैतिकता को अपने स्वार्थ से कहीं ऊपर रखते हैं। किंतु अब उनका संपूर्ण नैतिक जीवन दांव पर है। सीता की मुक्ति यदि न हो सकी तो संपूर्ण नैतिकता, सम्पूर्ण औदात्य व संपूर्ण गरिमा राम के लिए निरर्थक हैं। सीता का उद्धार न हो सकने की छटपटाहट इतनी तीव्र है कि राम का ‘एक और मन’ उठ खड़ा होता है जो ना थकने को तैयार है, ना झुकने को, न हारने को-

“ जानकी हाय! उद्धार प्रिया का हो ना सका ,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका ,
जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय ”

(च) यह आक्रामकता, यह दृढ़ता और यह विजयेच्छा किसी भी पराजयपूर्ण स्थिति को पलट सकती है। सीता के प्रति राम का प्रेम एवं प्रतिबद्धता का स्तर इतना ऊंचा है कि वे अपनी आंख निकाल कर देने को तैयार हैं। यह प्रेम का वही आदर्श है जिसे कबीर ने ‘सीस उतारे हाथि करि, सो पैसे घर माहि’ कहकर और जायसी ने ‘प्रेम पहार कठिन विधि गढ़ा, सो पै चढ़ै सीस सौं चढ़ा ’ कहकर व्यक्त किया है। राम कहते हैं-

“ दो नीलकमल हैं शेष अभी यह पुरश्चरण,
पूरा करता हूं देकर मातः एक नयन। ”

स्पष्ट है कि कविता की संरचना में सीता केंद्र में व हर मोड पर उपस्थित हैं। नारी मुक्ति निराला का स्थाई भाव है। साहित्य परंपरा में पुत्र के प्रति वात्सल्य तो खूब दिखता है किंतु सरोज स्मृति में पुत्री के प्रति वात्सल्य दिखाकर उन्होंने रूढ़िवादी पुरुष प्रधान समाज में पुत्री को मुक्त किया। शक्ति पूजा में सीता मुक्ति प्रकारांतर से नारी मुक्ति है। तुलसी के राम सीता के लिए लड़ते हैं पर सीता से समतामूलक प्रेम नहीं कर पाते। दुख की चरम स्थिति में वह कह बैठते हैं “नारी हानि बिसेष छति नाही।” दूसरी ओर, निराला के राम जानकी को पत्नी के रूप में नहीं प्रेयसी के रूप में देखते हैं “जानकी हाए उद्धार ‘ प्रिया’ का हो ना सका।” यह अंतर तुलसी और निराला का कम दोनों के युगों की विचार दृष्टियों का अधिक है।

इसके बाद भी यह नहीं भूलना चाहिए कि शक्ति पूजा संश्लिष्ट संवेदना की कविता है जिसकी वस्तु संरचना एक साथ कई पक्षों को समेटती है। सीता की मुक्ति इस भाव समुच्चय का केंद्रीय तत्व तो है किंतु एकमात्र नहीं है ,क्योंकि यह कविता राष्ट्रीय आंदोलन, शक्ति की मौलिक कल्पना, पौराणिक राम के मानवीय रूपांतरण निराला के आत्म संघर्ष तथा सत् असत् संघर्ष जैसे बिंदुओं को भी समानांतर रूप से धारण करती है।

राम की शक्तिपूजा की केंद्रीय संवेदना 'शक्ति की मौलिक कल्पना'

राम की शक्तिपूजा पौराणिक आख्यान के ढांचे में रची गई अत्यंत संभावनाशील कविता है जिसकी केंद्रीय संवेदना की व्याख्या विभिन्न समीक्षकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से की है। डॉ निर्मला जैन ने अपने प्रसिद्ध लेख 'शक्ति काव्य का प्रतिमान राम की शक्ति पूजा' में इस कविता का सारतत्व 'शक्ति चेतना' को माना है। प्रसिद्ध समीक्षक चंद्रकांत बांदीवडेकर ने भी इस कविता की समस्त संभावनाओं को टटोलते हुए अंततः शक्ति चेतना को ही सर्वाधिक प्रमुख संवेदना माना।

राम की शक्तिपूजा में शक्ति तत्व की केंद्रीयता इसके नामकरण से ही स्पष्ट है। कविता का नामकरण शक्तिपूजा पर ही केंद्रित है न कि नारी मुक्ति , निराला के आत्मसंघर्ष या सत् असत् संघर्ष जैसे अन्य भावों पर कविता का कथानक भी शक्ति की केंद्रीयता दर्शाता है। कविता का आरंभ इस बिंदु पर होता है कि नायक नैतिक होते हुए भी शक्तिहीन है जबकि खलनायक अनैतिक होते हुए भी शक्ति संपन्न है। '1936' के भारत में शक्ति का अनैतिक पक्ष में होना एक साथ कई संदर्भों पर चोट है , जैसे अंग्रेजी शासन, रूढ़िवादी साहित्यिक चिंतन सामंतवादी पुरुषवादी सामाजिक संरचना इत्यादि। कुछ चिंतक इस संवेदना को प्रगतिवादी क्रांति चेतना से जोड़ते हैं क्योंकि गांधी की अहिंसा का विफल होना तथा निराला का प्रगतिवादी मूल्यों से सहमत होना जैसे तथ्य इस व्याख्या की संभावना तलाशते हैं। बहरहाल, व्याख्या किसी भी अर्थ में हो शक्ति चेतना का उत्सव इस कविता का सारतत्व है।

कविता का विश्लेषण शक्ति तत्व की केंद्रीयता कई बिंदुओं पर दर्शाता है। कविता का आरंभ रवि हुआ अस्त से हुआ है जो शक्ति के अभाव का प्रतीकात्मक संकेत है। पहले 18 पंक्तियां राम की सेना के पराजय की ओर बढ़ने या शक्तिहीन होने का संकेत करती हैं। राम कोशिश कर कर के थक चुके हैं किंतु उन्हें सफलता नहीं मिल रही उनके विश्वविजयी बाण भंग हो रहे हैं उनके अंग बिंधे हुए हैं और मुट्ठियों के भीतर से खून बह रहा है-

"अनिमेष राम विश्वजिद्दीव्य शर भंग भाव,
विद्धांग बद्ध कोदण्ड मुष्टि खर रुधिर श्राव।"

शक्तिहीनता का संकट इतना अधिक है कि राम के मन में अमानिशा जैसी निराशा फैली हुई है। विजय किस प्रकार प्राप्त होगी ऐसी दिशा का ज्ञान खो गया है चिन्ता का अम्बुधि अप्रतिहत गरज रहा है किंतु समाधान नहीं मिल पा रहा है। जो व्यक्ति करोड़ों शत्रुओं के समक्ष भी दुराक्रांत रहा हो, स्थिरता जिसका सारतत्व हो शत्रुओं का दमन करते हुए जिसने कभी थकान महसूस न कि हो, वह शक्तिहीनता से इतना संशयग्रस्त, विकल, विचलित और पराजित हो गया है कि असमर्थ्य चेतना से उसका संपूर्ण व्यक्तित्व हिल गया है-

" स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर फिर संशय,
रह रह उठना जग जीवन में रावण जय भय
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु दम्भ श्रांत,
एक भी, अयुत लक्ष में रहा जो दुराक्रांत ,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार-बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार हार

इसी क्षण 'अंधकार घन में विद्युत' के समान सीता की स्मृति राम के मन में आती है। विदेह के उपवन का लतांतराल मिलन' और नयनों का नयनों से गोपन प्रिय संभाषण याद आता है। इस सुखद स्मृति का परिणाम है कि राम का पराजय भाव तुरन्त समाप्त हो जाता है और सीता ध्यान लीन राम के हृदय में विश्व विजय भावना भर आती है फूटी स्मृति सीता ध्यानलीन राम के हृदय में विश्व विजय भावना भर आती है-

"फूटी स्मित सीता ध्यानलीन राम के अधर,
फिर विश्व विजय भावना हृदय में आई भर।"

किंतु स्मृतिजन्य शक्तिचेतना वस्तुगत परिस्थितियों के समक्ष कमजोर सिद्ध होती है। समस्या केवल राम के मनोविज्ञान की नहीं है कि उन्हें उनकी शक्ति का एहसास कराकर युद्ध जीता जा सके। समस्या तो यह है कि रावण से आमंत्रण पाकर शक्ति खुद युद्ध में उतर गई है। वे रावण को गोद में लेकर बैठी है तथा राम के संपूर्ण अस्त्र उनके सामने निरर्थक हो गए हैं-

"फिर देखी भीमा मूर्ति आज रण देखी जो,
आच्छादित किए हुए सम्मुख समग्र नभ को
ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बुझ बुझ कर हुए क्षीण
पा महानिलय उस तन में क्षण में हुए लीन।"

यही इस कविता की केंद्रीय समस्या उभरती है। विभीषण के ओजपूर्ण व्याख्यान के बाद राम इस बात का खुलासा करते हैं की शक्ति स्वयं रावण के पक्ष में है कविता की संरचना का घुमाव बिंदु टर्निंग पॉइंट यही है –

"बोले रघुमणी - मित्रवर, विजय होगी न समर;
यह नहीं रहा नर वानर का राक्षस से रण ,
उतरी पा महाशक्ति रावण से आमंत्रण ;
अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति ! कहते छल छल
हो गए नयन, कुछ बूंद पुनः ढलके दृगजल।"

यहीं से कविता की दिशा बदलती है और कविता में उपस्थित नैराश्य व अंधकार टूटना शुरू होता है सारी समस्या को समझकर जाम्बवान विश्वस्त कंठ से राम को भी शक्ति धारण करने की सलाह देते हैं। उनका दावा है कि यदि अशुद्ध रावण उन्हें त्रस्त कर सका है तो शक्ति की उपलब्धि के बाद राम तो उसे ध्वस्त कर देंगे-

" रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त
शक्ति की करो मौलिक कल्पना ,करो पूजन
छोड़ दो समर जब तक न सिद्ध हो , रघुनंदन।"

राम को यह सुझाव उचित लगता है। वे प्रकृति के माध्यम से शक्ति की मौलिक कल्पना करते हैं इस कल्पना में पर्वत पार्वती का, सिंह समुद्र का, अहंकार का दमन महिषासुर मर्दन का और आकाश शंकर का प्रतीक है। यह कल्पना राम ने श्जनरंजन -चरण कमल -तल ,धन्य सिंह गर्जित भाव से की है। पुनः यह कल्पना कृतिवास रामायण के समान भक्ति पर नहीं बल्कि हठयोग प्रक्रिया पर आधारित है राम युद्ध से मन हटाकर शक्ति के दृढ़ आराधन का अनुष्ठान पूरा कर रहे हैं ,उनका मन तेजी से चक्र पर चक्र पार करता जा रहा है -

" क्रम - क्रम से हुए पार राघव के पंच दिवस,
चक्र से चक्र चढ़ता गया मन ऊर्ध्व निरलस।"

आठवें दिन राम का आराधन 'ब्रह्म - हरि – शंकर' का स्तर पार कर चुका है और आज्ञा चक्र पर समाहित है स उन्हें सहस्रार चक्र तक पहुंचने के लिए सिर्फ एक इंदीवर अर्पित करना बाकी है किंतु रात्रि के समय दुर्गा छिपकर आती हैं और यह पुष्प उठा ले जाती हैं राम अंतिम पुष्प अर्पित करना चाहते हैं किंतु कुछ न पाकर घोर अवसाद व आत्मधिक्कार से भर जाते हैं आत्म धिक्कार का मूल भाव यह है कि संपूर्ण जीवन नैतिक रूप से जीने के बावजूद यदि इतने महत्वपूर्ण संघर्ष में सफलता न मिले तो ऐसे जीवन को धिक्कार है-

" धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।"

किंतु यह कविता पुनः त्रासदी के मार्ग को छोड़ती है और तेजी से सुखांतता की ओर बढ़ती है। राम सीता मुक्ति के युद्ध में पराजित होने को हरगिज तैयार नहीं है। उनका अपराजेय मन पुनः जागृत होता है और वे सीता की मुक्ति के लिए अपनी आंख तक चढ़ाने को तैयार हो जाते हैं-

"यह है उपाय कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन,
कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन,
दो नीलकमल हैं शेष अभी यह पुरश्चरण
पूरा करता हूं देकर मातः एक नयन।"

जिस क्षण राम का आंख अर्पित करने का निश्चय दृढ़ हो जाता है, उसी क्षण देवी का त्वरित आगमन होता है और वे राम को विजय का आशीर्वाद देती हैं-

" जिस क्षण बंध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय,
कांपा ब्रह्मांड ,हुआ देवी का त्वरित उदय।
साधु ,साधु , साधक , धीर धर्म धन धन्य राम !
कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम। "

स्पष्ट है कि शक्तिचेतना इस कविता की कथ्य संरचना का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। किंतु ,यह नहीं भूलना चाहिए कि यह कविता अपनी अर्थ संरचना में बहुसूत्रीय ,बहु आयामी है। शक्ति चेतना इन सूत्रों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तो है, किंतु एकमात्र नहीं।

संदर्भ-

(1) राम की शक्तिपूजा,निराला की कालजयी कृति डॉ नागेंद्र
(2) रामविलास शर्मा- हिन्दी के छायावादी कवि
(3) डॉ . रामदरश राय छायावादी काव्यभाषा में अर्थतत्व
(4) डॉ. मोहन अवस्थी हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहास
(5) मोहन कुमार छायावादी सौन्दर्य चेतना और निराला की काव्य दृष्टि
(6) रामविलास शर्मा निराला की साहित्य साधना
(7) http://www.dristiias.com
(8) Kavita Kosh.org

****